you speaking when nothing is going on record? ...(*Interruptions*).., He is your good Minister ...(*Interruptions*)... Please take you seat. You have spoken too much without my permission ...(*Interruptions*)... I have never permitted you ...(*Interruptions*)... Please take you seat ...(*Interruptions*)... There can be no condition ...(*Interruptions*)... I will not accept any condition ...(*Interruptions*)... Please come to my office ...(*Interruptions*)... कोई रिकार्ड पर नहीं जाएगा। ...(**व्यवधान**)... Please take you seat ...(*Interruptions*)... I will not allow ...(*Interruptions*)... Let the Question Hour be over first, then, come to my office ...(*Interruptions*)... No, I will not allow ...(*Interruptions*)...

आप हाउस में आ जाइए, उसके बाद बात करेंगे। ...(**व्यवधान**)... मैं आपकी कंडिशनल बात मंजूर नहीं करता हूं आप मेरे हाउस में आ जाइए और मुझे बता दीजिए कि मामला क्या है, मैं उसको सुन लूंगा तो आपको एलाउ कर दूंगा। ...(**व्यवधान**)... क्वेश्चन ऑवर में एलाउ नहीं करूंगा।

Let us take up Question Hour.

ORAL ANSWERS TO QUESTIONS

सीमाओं से घुसपैठ की घटनाएं

*581. **डा॰ प्रभा ठाकुर:** क्या **गृह मंत्री** यह बताने की कृपा करेंगे कि:

(क) क्या देश के विभिन्न राज्यों में विदेशी घुसपैठियों द्वारा सीमापार से घुसपैठ करने के मामलों में गिरावट आई है;

(ख) यदि हां, तो तत्संबंधी ब्यौरा क्या है;

(ग) देश की कौन-सी सीमा घुसपैठ के लिए सर्वाधिक सुभेद्य है और उसके क्या कारण हैं; और

(घ) घुसपैठ को रोकने के लिए सरकार द्वारा किये गये उपायों का ब्यौरा क्या है?

गृह मंत्री (श्री शिवराज वि॰ पाटिल): (क) से (घ) इस संबंध में एक विवरण सदन के पटल पर रखा जा रहा है।

विवरण

(क) विदेशी घुसपैठियों आदि की आशंका के बारे में उपलब्ध सूचना से पता चलता है कि भारत-पाकिस्तान और भारत-बांग्लादेश सीमाओं पर सीमा-पार से होने वाली घुसपैठ में गिरावट आई है। भारत-भूटान, भारत-नेपाल, भारत-म्यांमार और भारत-चीन सीमाओं पर विदेशियों द्वारा सीमा-पार से घुसपैठ किए जाने की कोई बड़ी घटना घटित नहीं हुई है।

(ख) विगत तीन वर्षों के दौरान भारत-पाकिस्तान और भारत-बांग्लादेश अंतर्राष्ट्रीय सीमाओं पर विदेशी घुसपैठियों की आशंका का ब्यौरा नीचे दिया गया है:

सीमा	वर्ष		
	2004	2005	2006
भारत-बांग्लादेश	9282	6384	5130
भारत-पाकिस्तान	187	202	128

(ग) बांग्लादेश की खराब आर्थिक स्थिति होने; सुभेद्य और नदी की तटवर्ती सीमा होने; बांग्लादेश में आबादी का अत्यधिक घनत्व होने; और सीमा के आर-पार रह रहे लोगों में सांस्कृतिक, धार्मिक, भाषाई तथा नृजातीय समानतायें होने के कारण भारत-बांग्लादेश सीमा घुसपैठ के लिए सुभेद्य है। भारत-पाकिस्तान सीमा भी आतंकवादियों की घुसपैठ के लिए सुभेद्य है।

(घ) सरकार ने विदेशी राष्ट्रिकों द्वारा सीमा-पार से घुसपैठ किए जाने को रोकने के लिए बहु-आयामी दृष्टिकोण अपनाया है जिसमें अन्य बातों के साथ-साथ गश्त लगा करके और निगरानी चौकियां स्थापित करके सीमा की चौबीसों घंटे निगरानी करना; सीमा पर बाड़ का निर्माण करना और तेज रोशनी करना; आधुनिक और उच्च प्रौद्योगिकी के निगरानी उपकरण लगाना; आसूचना व्यवस्था का उन्नयन करना और राज्य सरकारों तथा संबंधित आसूचना एजेंसियों के बीच समन्वय स्थापित करना शामिल है।

Incidence of cross-border Intrusion

†*581. DR. PRABHA THAKUR: Will the Minister of HOME AFFAIRS be pleased to state:

(a) whether incidence of cross-border intrusions by foreign intruders in various States of the country is on the decline;

†Original notice of the question was received in Hindi.

(b) if so, the details thereof;

(c) the borders of the country which are highly vulnerable to intrusions and the reasons therefor; and

(d) the details of measures taken by Government to check intrusions?

THE MINISTER OF HOME AFFAIRS (SHRI SHIVRAJ V. PATIL): (a) to (d) A Statement is laid on the Table of the House.

Statement

(a) Available information about apprehension of foreign intruders etc. indicates a decline in cross-border infiltration on the Indo-Pakistan and Indo-Bangladesh borders. There is no significant incidence of cross-border intrusion of foreigners on the Indo-Bhutan, Indo-Nepal, Indo-Myanmar and India-China borders.

(b) The details of apprehension of foreign intruders on Indo-Pakistan and Indo-Bangladesh International Borders during the last three years are as under:

Border	Year		
	2004	2005	2006
Indo-Bangladesh	9282	6384	5130
Indo-Pakistan	187	202	128

(c) Indo-Bangladesh border is vulnerable to infiltration on account of poor economic conditions on Bangladesh side; porous and riverine border; high density of population in Bangladesh; and cultural, religious, linguistic and ethnic similarities among the people living on either side of the border. Indo-Pakistan border is also vulnerable to terrorist infiltration.

(d) The Government have adopted a multi-pronged approach to contain cross-border intrusions by foreign nationals which includes, *inter alia*, round the clock surveillance of the border by patrolling and by establishing observation posts; construction of border fencing and flood lighting; introduction of modern and hi-tech surveillance equipment; upgradation of intelligence set up and coordination with the State Governments and concerned intelligence agencies.

डा॰ प्रभा ठाकुर: सर, मंत्री जी ने उत्तर दिया है कि विदेशी घुसपैठियों की ...(**व्यवधान**)... संख्या में गिरावट आई है, महोदय, अब तो कृपया मुझे बोलने दिया जाए। सदन का काफी समय ...(**व्यवधान**)...

श्री सभापति: आप बोलिए, क्वेश्चन करिए।

डा॰ प्रभा ठाकुर: सर, सदन की कार्यवाही को पूरा देश देखता है और यह बड़े अफसोस की बात है, स्कूल के बच्चों में भी इससे ज्यादा अनुशासन होता है। सर, प्रश्न काल में तो आप कृपया इस तरह से एलाउ न करें। ...(**व्यवधान**)...

श्री सभापति: आप क्वेश्चन करिए। ...(**व्यवधान**)... क्वेश्चन करिए, मैंने तो मना किया है।

डा॰ प्रभा ठाकुर: ये भी गंभीर प्रश्न होते हैं। ...(**व्यवधान**)... सदस्य भी जो प्रश्न करते हैं वे भी गंभीर प्रश्न हैं। सर, जो मंत्री जी का उत्तर आया है कि घुसपैठ की संख्या में गिरावट आई है और कोई बड़ी घटना नहीं घटित हुई है। महोदय, यह बड़ी चिंताजनक स्थिति है कि बांग्लादेश की सीमाओं से और पाकिस्तान की सीमाओं से लगातार हजारों की संख्या में घुसपैठ जारी है। इस घुसपैठ के माध्यम से आर्थिक विषमता तो पैदा होती ही है, साथ ही सामाजिक सद्भावना को भी चोट पहुंचती हैं इन घुसपैठियों में कई आतंकवादी भी देश में आ जाते हैं। इनसे मुम्बई ट्रेन जैसे बम कांड होते हैं। ...(**व्यवधान**)...

श्री सभापति: आप क्वेश्चन पर आइए, क्वेश्चन पर आइए।

डा॰ प्रभा ठाकुर: वाराणसी मंदिर में बम कांड होते हैं और दिल्ली, हैदराबाद में भी विस्फोट की घटनाएं होती हैं, ...(**व्यवधान**)...

श्री सभापति: आप क्वेश्चन करिए। ...(**व्यवधान**)...

श्री शाहिद सिद्दिकी: एन्काउंटर भी होते हैं, सारी जगहों पर। ...(**व्यवधान**)...

†[**شری شاہد صدیقی:** انکاؤنٹر بھی ہوتے ہیں، ساری جگہوں پر۔مداخلت۔]

श्री सभापति: अब आप तो बैठ जाइए। प्रभा जी, आप सप्लीमेंट्री कर रही हैं, आप क्वेश्चन करिए। ...(**व्यवधान**)... आप क्वेश्चन करिए, इतनी देर में आपने कोई क्वेश्चन तो पूछा नहीं है। आप प्रश्न पूछिए, मैं प्रश्न के अलावा कुछ भी एलाउ नहीं करूंगा।

डा॰ प्रभा ठाकुर: सभापति जी, मैं मंत्री जी से यह जानना चाहती हूं ...(**व्यवधान**)...

श्री सभापति: क्या जानना चाहती हैं?

---

†[Transliteration of Urdu Script.]

डा॰ प्रभा ठाकुर: ये जो घुसपैठ संबंधी आंकड़ें हैं, ये जो घुसपैठ के मामले हैं, इनको रोके जाने की पूरी जिम्मेदारी क्या केवल केंद्र सरकार की होती है? राज्य सरकारों की इसमें क्या भूमिका होती है और वह भूमिका कितनी कारगर है?

श्री सभापति: ठीक, है, सुन लिया है।

श्री शिवराज वी॰ पाटिल: सभापति जी, प्रश्न बहुत ही अच्छे ढंग से पूछा गया है, खासकर आखिर का जो हिस्सा है। वह यह जानना चाहती हैं कि इसकी जिम्मेदारी किसकी है? असल में मैं यह कहना चाहूंगा कि इसकी जिम्मेदारी हम स्टेट गवर्नमेंट की नहीं मानते हैं। हम इसकी जिम्मेदारी यूनियन गवर्नमेंट की मानते हैं। जब कोई झगड़ा होता है, मर्डर होता है, उसको पकड़ने और रोकने की जिम्मेदारी स्टेट गवनमेंट की है, लेकिन बॉर्डर पर जो इन्फिल्ट्रेशन होता है, घुसपैठ होती है, उसको रोकने की जिम्मेदारी गवर्नमेंट ऑफ इंडिया की है, केन्द्र सरकार की है। हमने इसीलिए पैरा मिलिट्री फोर्सेस बनाई हैं। हमारी पैरा मिलिट्री फोर्सेज़ का तीन चतुर्थांश हिस्सा बॉर्डर पर लगा हुआ है। हमारे आठ लाख लोगों में से छह लाख लोग इन बॉर्डर्स पर हैं। ये लोग समझते हैं कि बॉर्डर पर इसे रोकने का काम मिलिट्री के लोग कर रहे हैं, जबकि मिलिट्री लड़ाई के समय में आगे आती है। इंटरनेशनल बॉर्डर पर रोकने का काम, जो लाइन ऑफ कंट्रोल है, जहां पर डिस्प्यूट है, वहां पर मिलिट्री है। वह बहुत थोड़ी है। बाकी सभी जगह पर गवर्नमेंट ऑफ इंडिया की बी॰एस॰एफ॰ की फोर्सेज़, आई॰टी॰बी॰पी॰ की फोर्सेज़, एस॰एस॰बी॰ की फोर्सेज़ लगी हुई है। हमारा बॉर्डर बहुत लंबा है। 5,000 किलोमीटर हमारा लैंड का बॉर्डर है, 7,000 किलोमीटर कॉस्टल बॉर्डर है। इन दोनों जगहों की सुरक्षा गवर्नमेंट ऑफ इंडिया अपनी तरफ से करती है। जैसे उस काम में हम उनकी मदद करते हैं, वैसे ही इस काम में स्टेट गवर्नमेंट भी गवर्नमेंट ऑफ इंडिया की मदद करती है।

डा प्रभा ठाकुर: सभापति जी, मेरा सप्लीमेंट्री है। मैं माननीय मंत्री महोदय से यह जानना चाहती हूं कि घुसपैठ संबंधी ये जो आंकड़े दिए जाते हैं, इनका क्या आधार है? जब घुसपैठियों की संख्या की जानकारी हो सकती है, तो आखिर घुसपैठियों को क्यों नहीं रोका जा सकता है? मैं यह जानना चाहती हूं।

श्री शिवराज वी॰ पाटिल: सभापति जी, जिनको पकड़ा जाता है, जिनके खिलाफ कार्रवाई की जाती है, उसके आधार पर आंकड़ें दिए जाते हैं। हमारे देश में यह बड़ा मुश्किल होता है। क्योंकि हमारे चेहरे एक जैसे हैं, हमारी भाषा एक जैसी है, इसकी वजह से यदि किसी ने कह दिया कि हम हिन्दुस्तान के हैं, भारत के हैं, तो हम उन्हें कुछ कह नहीं सकते हैं। इसके लिए हमारा फोरेनर्स एक्ट बना हुआ है। इसके लिए कोर्ट में केस ले जाकर साबित करने के बाद वे कुछ करते हैं। यह जो आंकड़े दिए गए हैं, ये पक्के आधार पर दिए गए हैं। इनमें थोड़ा-सा इधर-उधर अंतर हो सकता है। मैं यह नहीं कह रहा हूं कि ये आंकड़े सौ प्रतिशत सही हैं, कहीं ज्यादा भी हो सकता हैं, कहीं कम भी हो सकते हैं, हमने जो एक्चुअल एक्शन लिया है, उसके आधार पर हमारे पास जो आंकड़ें हैं, वे आंकड़ें सदन में रखें हैं।

श्रीमती सुषमा स्वराज: सभापति जी धन्यवाद। मैं मंत्री महोदय से जानना चाहूंगी कि आपने अपने लिखित उत्तर में सीमा पार से घुसपैठ रोकने के लिए जिन उपायों का जिक्र किया है, उसमें सीमा पर बाढ़ निर्माण का काम भी एक है। भारत-बांग्लादेश और भारत-पाकिस्तान बॉर्डर पर यह फेंसिंग का काम कब शुरू किया गया था? अभी तक कितनी फेंसिंग हुई है? इसमें क्या-क्या बाधाएं आ रही हैं? उन बाधाओं को दूर करने के लिए आप क्या काम कर रहे हैं?

श्री शिवराज वी॰ पाटिल: सभापति जी, हमारा और बांग्लादेश का जो बॉर्डर है, वह सबसे लंबा बॉर्डर है। यह सब तरफ से है। यह 4,000 किलोमीटर का बॉर्डर है। यह काम बहुत दिनों पहले शुरू हुआ था। हमने करीब-करीब तीन चतुर्थांश काम पूरा कर दिया है, बाकी का काम कर रहे हैं इसमें जो बाधाएं हैं, वे इस प्रकार की हैं बांग्लादेश और इंडिया के बॉर्डर का जो इलाका है, वह रेवराइन है। वहां पर छोटी-छोटी नदियां निकलकर जाती हैं। ये इस प्रकार से जाती हैं कि बारिश आने के बाद, बाढ़ बनाने के लिए हमने जो कुछ कदम उठाया है, वह बहकर चले जाते हैं। यह एक मुश्किल हो जाती हैं उसमें दूसरी मुश्किल यह है कि बांग्लादेश और इंडिया में थोड़ा सा डिस्प्यूट हो रहा है। इंटरनेशनल बॉर्डर के 150 मीटर तक बाढ़ नहीं लगाई जानी चाहिए, यह बात हम भारत के लोग मानने के लिए तैयार नहीं हैं। वे कहते हैं कि यह आपको माननी पड़ेगी। वे कहते हैं कि कुछ दिनों पहले कुछ अधिकारियों में यह बातचीत हुई है, उसकी वजह से यह करना है। मगर हम कहते हैं कि अधिकारियों के लेवल पर आपके द्वारा की हुई बातचीत अलग है और सरकार के लेवल पर की हुई बातचीत अलग है, वह एक दूसरी मुश्किल है। तीसरी बात यह है कि बॉर्डर की जो जमीन है, वह ऐसी जमीन है जहां पर अगर pole लगाए जाते हैं, तो वे आसानी से धंस जाते हैं। ये कुछ अड़चनें हैं, मगर काफी काम हुआ है और पहले जो काम हुआ था, उसको सुधारने का काम भी हमने किया है और उसको modernise करने का काम किया है। हम वहां electronic gadgets भी लगा रहे हैं, night vision devices भी लगा रहे हैं और उनको strengthen कर रहे हैं।

SHRI MOINUL HASSAN: Sir, this is actually in continuation to the earlier question. In Indo-Bangladesh border, a lot of fencing is there. The fencing is on the Indian land. But there is 150 metre of land on the Bangladesh side, which is ours. The common farmers or the agriculturists are not allowed to go for the farming activities in that particular area regularly, as a result of which the farmers are facing problems everyday. Many times, Sir, the BSF people are also firing on our own citizens. Therefore, through you, sir, I would like to know from the hon. Minister as to what action has been taken to make the system easy, so that our farmers are able to go to that particular area and do the farming activities.

SHRI SHIVRAJ V. PATIL: Sir, this is the real problem which is faced by the farmers in that area because the land which belongs to them is on the other side of the fence and on this side of the international border. In fact, we have given them the outlets and they can go through the doors and the passages into the land; they can cultivate the land and they can come back. As far as my information goes, there have been some incidents where this thing might have happened and has happened also. But, by the large, they are satisfied and our people are helping them to go there and come back. In fact, they are wanting more doors to be opened. They are asking the doors to be kept opened throughout the day and the night and things like that. We will definitely take steps to see that they are facilitated in doing that. They are really facing the difficulties because the inlets, the doors, the passages which can take the farmers from this side into their land are also limited. We would like to have more such passages provided to them, and if there is anything else which has to be done, we would be only happy to consider it for a favourable action.

श्री मोती लाल वोरा: माननीय सभापति महोदय, मैं माननीय मंत्री जी से यह निवेदन करना चाहता हूं कि पिछले 3 वर्षों में वर्ष 2004, 2005 और 2006 में घुसपैठियों की संख्या में कमी हुई है। माननीय मंत्री जी ने इस बात को स्वीकार किया है कि भारत-बंगला देश सीमा घुसपैठ के लिए सुभेद्य है और भारत-पाकिस्तान सीमा भी आतंकवादियों की घुसपैठ के लिए सुभेद्य है। मैं माननीय मंत्री जी से यह जानना चाहता हूं कि जब आपकी सीमा सुभेद्य है, तो आतंकवादियों को, घुसपैठियों को आने में पूरी सहूलियत हो जाती है। क्या माननीय मंत्री जी इस बात की जानकारी देंगे कि सीमा पर जो बाड़ लगाने का काम है, चौकियां स्थापित करने का काम है, surveillance का काम है, उस दिशा में क्या प्रगति हुई है, क्योंकि आपने स्वयं स्वीकार किया है कि हमारी जो सीमा है, उसमें आसानी से लोग आ सकते हैं। उनकी संख्या में कमी हुई है, लेकिन इसे रोकने की दिशा में माननीय मंत्री जी कौन से ठोस कदम उठा रहे हैं?

श्री शिवराज वी॰ पाटिल: सभापति जी, मैंने इस संबंध में पहले ही बताया है कि ये जो घुसपैठिए आ रहे हैं, ये सारी जगहों से नहीं आ रहे हैं। अगर कहीं riverine area है, नदी बह रही है, वहां पर हम बाड़ नहीं बना सकते हैं, तो वहां से भी वे आ जाते हैं और कभी-कभी जो पुरानी बाड़ बनी हुई होती है, वह टूटी होती है, उसको दुरुस्त करने का काम भी हम कर रहे हैं। इसके बाद इस बाड़ को और ज्यादा मजबूत करने के लिए हम electronic gadgets भी लगा रहे हैं, night vision devices भी लगा रहे हैं और दूसरे कदम भी उठा रहे हैं, यह तो भारत और बंगला देश के संदर्भ में है। पाकिस्तान और भारत के बॉर्डर पर जो बाड़ बनी है, जो fence बना है, वह नए तरीके से बना हुआ है और वह ज्यादा अच्छा है, लेकिन उसमें भी सुधार करने की बात चल रही है। मगर

मैं कहना चाहूंगा कि जो आना चाहते हैं और जो उन्हें रोकना चाहते हैं, उनके दिमाग एक दूसरे के साथ compete कर रहे हैं। जो आने वाले हैं, वे कुछ नया रास्ता निकाल कर — उसके ऊपर रबड़ डाल कर, उसको काट कर या कोई और चीज कर — आने की कोशिश कर रहे हैं। वे ऐसा नहीं कर सकें, इस प्रकार की कोशिश चल रही है, उसके अन्दर झगड़ा चल रहा है। जब मैं यह कह रहा हूं कि वे कहीं से आ सकते हैं, तो इसका मतलब यह नहीं है कि वे खुले तरीके से आ रहे हैं। बाड़ की वजह से उनका आना बहुत कम हो गया है। On the Line of Control हमारे आर्मी के जो लोग हैं और दूसरे इंटरनेशनल बॉर्डर्स पर जो पैरा मिलिट्री फोर्सेज़ हैं, उनके vigil की वजह से भी और लोगों के co-operation की वजह से भी यह हुआ है। मैं एकदम ऐसा कह दूं कि कोई भी नहीं आ रहा है, तो ऐसा भी नहीं है और वह ठीक बात नहीं है। इसको ध्यान में रख कर हमने बहुत संतुलित रूप से सही तरीके से जवाब देने की कोशिश की है।

श्री बनवारी लाल कंछल: मान्यवर, माननीय मंत्री जी ने जो जवाब दिया है, यह पूरी तरह से सत्य नहीं है। आपने लिखा है कि भारत-नेपाल से विदेशियों के सीमा पार घुसपैठ में कोई बड़ी घटना नहीं हुई है। मैं माननीय मंत्री जी को अवगत कराना चाहता हूं कि नेपाल में अभी जो माओवादी आन्दोलन चला और आतंकवाद चला, मेरे लखनऊ में नेपाल से कम-से-कम 100 परिवार आकर बस गए हैं। जब हम शादियों में जाते हैं, तो लोग परिचय कराते हैं कि ये नेपाल से आकर यहां बस गए हैं। इसलिए मैं समझता हूं कि नेपाल से भारत आने वाले विदेशियों की संख्या हजारों में है, यह 100-50 में नहीं है। उसकी भी सही तरह से जानकारी की जानी चाहिए। क्या सरकार नेपाल सीमा पर भी बाड़ लगाने का काम करेगी? यदि नहीं करेगी, तो नेपाल से तो आए, बैठ गए, एक किलोमीटर भी ...(**व्यवधान**)...

श्री सभापति: यह बांग्लादेश का क्वैश्चन है।

श्री बनवारी लाल कंछल: यह जो बांग्लादेश की बात है, अभी हम चेरापूंजी गए थे, चेरापूंजी से बांग्लादेश का बॉर्डर 20 किलोमीटर है। हमारे हिन्दुस्तान में 500 बांग्लादेशी per day आ रहे हैं, मिजोरम में आ रहे हैं, शिलौंग में आ रहे हैं। यह जो संख्या दी हुई है, बहुत कम संख्या है। इसकी पूरी तरह से गम्भीरता से संज्ञान लिया जाए और इस पर रोक लगाई जाए।

श्री शिवराज वी॰ पाटिल: श्रीमन्, यह बात समझना जरूरी है कि जहां तक नेपाल और भूटान का सवाल है, वहां के लोगों को यहां आने के लिए वीज़ा नहीं लेना पड़ता है। यह बॉर्डर खुला बॉर्डर है। हमारे लोग वहां जा सकते हैं और उनके लोग यहां आ सकते हैं। यह जो सवाल है, बांग्लादेश के बॉर्डर पर, पाकिस्तान के बॉर्डर पर, म्यांमार के बॉर्डर पर और चीन के बॉर्डर पर है। ये जो हमारे दूसरे दो पड़ोसी राष्ट्र हैं, उनके और हमारे बीच जो अन्तर्राष्ट्रीय राजनीतिक सम्बन्ध हैं, उसके मुताबिक उनके आने पर कोई रोक नहीं लगाई गई है। इस वजह से कभी ऐसा प्रतीत होता है कि वे कैसे आ रहे हैं।

डा॰ मुरली मनोहर जोशी: सभापति जी, मंत्री जी यह बता दें कि अगर कोई बांग्लादेशी या पाकिस्तानी नेपाल के रास्ते से यहां आए, तो उसका क्या होता है?

श्री सभापति: वह नेपाली नहीं होता है। श्री देवव्रत बिस्वास।

श्री देवव्रत बिस्वास: सभापति जी, हमारे एक माननीय सदस्य मोइनुल हसन जी ने जो सवाल उठाया, उसके ऊपर माननीय गृह मंत्री जी ने जो जवाब दिया है, उसके ऊपर हमारी यह पहली टिप्पणी होगी कि यह बॉर्डर के लोगों की जो समस्या है, उस समस्या को अभी तक गम्भीरता से नहीं देखा जा रहा है। The Parliamentary Affairs Minister is here; he is very much aware of the situation in that area. Zero point से fencing के अन्दर जो छोटे-छोटे किसानों की जमीन, स्कूल, shops हैं, वहां के लोगों को आपने वहां से हटा दिया है। इससे एक गम्भीर समस्या पैदा हुई है। उन लोगों को economically, socially rehabilitate करने के लिए आपने कोई स्कीम नहीं ली है। जब तक यह स्कीम नहीं होगी, तब तक आपकी fencing की जो समस्या है, यह समस्या रहेगी।

जहां तक घुसपैठियों का सवाल है, आप बोल रहे हैं कि हम घुसपैठियों को रोकना चाहते हैं। बांग्लादेश-हिन्दुस्तान के बॉर्डर में Indian enclaves within Bangladesh हैं, Bangladesh enclaves within India हैं। How are you protecting them? How are your forces working there? यह enclaves की जो समस्या है, इन्दिरा-मुजीब एग्रीमेंट, नेहरु-नून एग्रीमेंट के तहत जो exchange of enclave होना चाहिए था, आज तक आप लोगों ने वह exchange of enclave नहीं किया और आप कह रहे हैं कि घुसपैठियों को रोकेंगे। वह तो घुसपैठियों का बर्थ-प्लेस हो गया है। मैं चाहूंगा कि आप एनक्लेव के बारे में जवाब दें।

श्री शिवराज वी॰ पाटिल: श्रीमन्, माननीय सदस्य ने एनक्लेव का इश्यू सही ढंग से उठाया है। ऐसे बहुत सारे एनक्लेव हैं जहां कि झगड़ा चल रहा है और हमारे पास जो एनक्लेव आए हैं, वे हिस्टॉरीकल तरीके से आए हैं।

SHRI DEBABRATA BISWAS: We know that.

MR. CHAIRMAN: You don't know about *Raja, Maharajas.*

श्री देवव्रत बिस्वास: यह आप भी जानते हैं।

श्री शिवराज वी॰ पाटिल: यह राजा-महाराजाओं के एक-दूसरे को दिए हुए झगड़े हैं। श्रीमन्, अब यह मैटर ऐसा है जिस पर बांग्लादेश और इंडिया - दोनों को बैठकर बात कर के समझदारी से कदम उठाने हैं और जब तक वह एग्रीमेंट दोनों देशों के बीच नहीं होता है, किसी को उठाकर इधर-से-उधर फेंक देना या उधर से इधर फेंक देना भी प्रॉब्लम क्रिएट करता है। श्रीमन्, एनक्लेव

की प्रॉब्लम है, नहीं है मैं ऐसा नहीं कर रहा हूं। यह प्रॉब्लम बहुत दिनों से है, पिछले 50 साल से यह प्रॉब्लम चल रही है। यह दो साल से बनी हुई प्रॉब्लम नहीं है, इस बात को भी आपको ध्यान में रखना होगा। यह प्रॉब्लम है, इस को सॉल्व करने की हमारी कोशिश है। जहां तक स्कूल वगैरह हैं, मैं आप को बताना चाहूंगा क यह जो 50 मीटर का फासला है, यह सब जगह पर नहीं है, यह कुछ जगहों पर है और जहां पर वह प्रॉब्लम है, वहां पर हम जो कर सकते थे, किया है। इस के बाद भी अगर आप कुछ सुझाव देंगे तो उस को इस दृष्टि से देखेंगे कि हम को उनकी मदद करनी है।

DR. GYAN PRAKASH PILANIA: Mr. Chairman, Sir, what the hon. Minister has mentioned is the tip of the iceberg. He has mentioned numbers of only those who have been arrested, but not those Bangladeshis who have intruded and escaped arrest. According to general perception, there are two crore of Bangladeshi intruders in the country which is the most potent threat to the sovereignty, integrity and secularity of this country. The demographic pattern in all the seven Eastern States is changing because of this. When General Sinha was the Governor of Assam, he had made a very specific report on this account. The Intelligence Agencies have also made a report. I have got a report with me, Sir.

MR. CHAIRMAN: Don't quote the report.

DR. GYAN PRAKASH PILANIA: But in that it is written, "Bangladeshi border, which is 4,039 kilometres, being porous, is one of the most threatening borders from where they are coming." I would like to know specifically how alarming is the situation.

MR. CHAIRMAN: What is your question?

DR. GYAN PRAKASH PILANIA: Sir, my question is, how alarming is the situation of Bangladeshi intruders? What is their real number?

SHRI SHIVRAJ V. PATIL: Sir, let us not make this situation appear to be alarming ...*(Interruptions)*... The situation is controllable, and we are quite confident to control it. But if we take a stand which is not in tune with the reality as such, but it is a political stand, then it appears to be or it is made to appear alarming; we should not do that. Problem is there. We are in a position to solve it, and we are trying to solve it under the Foreigners Act and the other Acts with the help of accords with the State Governments also. As far as stopping the infiltration is concerned, it is the responsibility of the Union Government. I have already said in reply to the first question. But, as far as detecting and then taking the cases to the courts is concerned, it has to be done. May I explain to you that if you detect the

cases and then ask the neighbouring country to take them back they say, "We don't accept this verdict". Then, what do we do? If they are not accepting these people back into their country, what do we do? Do we keep them here? Do we push them there? What do we do with them? That is also a human problem, and we are trying to solve this human problem ...*(Interruptions)*...

SHRIMATI BRINDA KARAT: The hon. Member wants to know whether the figure is two crores. He has mentioned the figure.

SHRI SHIVRAJ V. PATIL: I do not think that number is correct. The number should not be quoted unnecessarily, to make the issue alarming ...*(Interruptions)*...

श्री सत्यव्रत चतुर्वेदी: धन्यवाद, सभापति महोदय। अंततः आपका ध्यान मेरी तरफ चला ही गया। ...(व्यवधान)...

एक माननीय सदस्य: सभापति जी, ...(व्यवधान)...

श्री सभापति: आपका बॉर्डर से कोई मतलब नहीं है। आप बॉर्डर पर नहीं रहते हैं। ...(व्यवधान)... बॉर्डर पर रहने वालों को अलाऊ किया गया है।

श्री सत्यव्रत चतुर्वेदी: सभापति महोदय, अन्तर्राष्ट्रीय सीमा से ...(व्यवधान)...

MR. CHAIRMAN: Please keep silence.

श्री सत्यव्रत चतुर्वेदी: महोदय, अन्तर्राष्ट्रीय सीमाओं से घुसपैठ का यह मामला न सिर्फ गम्भीर है बल्कि बहुत संवेदनशील भी है। बहुत-सारे प्रश्न पूछ लिए गए हैं। मैं एक बिल्कुल भिन्न प्रश्न पूछना चाहता हूं। मैं आपके माध्यम से माननीय मंत्री जी से यह जानना चाह रहा हूं कि हम समय-समय पर ये रिपोर्ट्स देखते हैं। घुसपैठ के बारे में गृह मंत्रालय का आकलन एक होता है, विदेश मंत्रालय का आकलन कुछ और होता है और हमारे रक्षा मंत्रालय का आकलन कुछ और होता है। कोई कहता है कि घुसपैठ बढ़ी है, कोई कहता है कि जैसी पहले थी, वैसी ही है और कोई कहता है कि घुसपैठ में गिरावट आई है। मैं आपके माध्यम से माननीय मंत्री जी से यह पूछना चाह रहा हूं कि ...(व्यवधान)...

श्री सभापति: इन तीनों में कौन-सा सही है ...(व्यवधान)...

श्री सत्यव्रत चतुर्वेदी: जो विभिन्न मंत्रालय इस घुसपैठ के मसले पर समय-समय पर अपना आकलन देते रहते हैं, क्या उनके बीच में सामंजस्य, समन्वय और सूचनाओं के आदान-प्रदान करने का कोई मैकेनिज्म है, कोई ऐसा तंत्र है? ये जो भिन्न-भिन्न आंकड़े दिए जाते हैं, जो भिन्न-भिन्न

आकलन आते हैं, इनसे जो कन्फ्यूजन पैदा होता है, जो भ्रम पैदा होता है और जो इसकी विश्वसनीयता प्रभावित होती है, उसके बारे में सरकार और उनका मंत्रालय क्या कर रहा है?

श्री शिवराज वी॰ पाटिल: श्रीमन्, मैं बड़ी नम्रता से कहना चाहूंगा कि गृह मंत्रालय क्या कह रहा है या विदेश मंत्रालय क्या कह रहा है या दूसरा कोई मंत्रालय क्या कह रहा है, इसके बारे में उन्होंने जो authentic reports दी हैं, उनको पढ़ कर, उनको देख कर आप कह सकते हैं। अगर कोई रिपोर्ट बाहर से आई है, मीडिया के अन्दर आई है, आप उसको देख रहे हैं और बोल रहे हैं, तो उसके ऊपर कितना भरोसा रखना चाहिए, यह भी देखा जाए।

जहां तक यह कहने का सवाल है कि कौन-से आंकड़े authentic हैं, तो उस मंत्रालय के आंकड़े को ज्यादा authentic मानना चाहिए, जिसकी इसके बारे में जिम्मेदारी भी है। मेरी दृष्टि से हमारे पास इस प्रकार का कोई difference of opinion मुझे तो नजर नहीं आया। अगर कहीं किसी को नजर आ रहा है, वह बता दिया, तब हम कहते हैं।

सर, हम लोग आपस में मिलते रहते हैं। हम अनेक बार मिलते रहते हैं। असल में कभी-कभी Committee on Security में तो महीने में चार बार भी मिलते हैं। अगर ये सब आंकड़े कुछ गलत हैं, तो हम एक-दूसरे से बात भी कर सकते हैं ...(व्यवधान)... मगर ऐसा occasion अभी तक नहीं आया है ...(व्यवधान)...

श्री सत्यव्रत चतुर्वेदी: माननीय सभापति जी, ...(व्यवधान)...

श्री सभापति: ठीक है ...(व्यवधान)... Let him finish. *(Interruptions)* Let him finish. *(Interruptions)* आप एक बार बैठिए ...(व्यवधान)...

श्री सत्यव्रत चतुर्वेदी: माननीय सभापति महोदय, विभिन्न मंत्रालयों के प्रवक्तागण समय-समय पर मीडिया में आकर जो वक्तव्य देते हैं, ...(व्यवधान)... मैं तो उनका हवाला दे रहा हूं ...(व्यवधान)...

श्री सभापति: आप एक बार बैठिए ...(व्यवधान)... आप बैठिए ...(व्यवधान)... Don't disturb. *(Interruptions)* Let him speak. *(Interruptions)* Let him finish. *(Interruptions)*

श्री रूद्रनारायण पाणि: महोदय, ...(व्यवधान)...

MR. CHAIRMAN: Please do not disturb. *(Interruptions)* Please do not disturb. *(Interruptions)* Nothing will go on record. *(Interruptions)* इनका कुछ रिकार्ड मत करिए ...(व्यवधान)... जबरदस्ती खड़े हो जाते हैं ...(व्यवधान)...

श्री रुद्रनारायण पाणि: *

श्री शिवराज वी॰ पाटिल: श्रीमान् हम यहां पर बैठे हुए अपने साथियों को कहना चाहेंगे कि जो हम बोल रहे हैं, आप उसके ऊपर विश्वास कीजिए। जो किसी को जिम्मेदार नहीं है, वह बोल रहा है, उसके ऊपर विश्वास क्यों करते हैं? ...(व्यवधान)... अगर हमारे डिफेंस मिनिस्टर बोलें, एक्सटर्नल अफेयर्स मिनिस्टर बोलें या मैं बोलूं तब आप उसके ऊपर विश्वास कीजिए। कोई ...(व्यवधान)...

श्री सभापति: आप उनको कह दीजिए कि मुझको एक्शन लेना पड़ेगा ...(व्यवधान)...

श्री शिवराज वी॰ पाटिल: अगर कोई एक पोलिटिकल ...(व्यवधान)... लिखकर कुछ बोल रहा है, तो उसके ऊपर आपको कम विश्वास करना चाहिए।

MR. CHAIRMAN: Shri Matilal Sarkar. You are from Tripura.

SHRI MATILAL SARKAR: Sir, my supplementary question has two parts. The first part is this. I have gone to some borders.

MR. CHAIRMAN: You are always on borders.

SHRI MATILAL SARKAR: Sir, I have seen that the fencing is more than half a Kilometre inside the Indian border leaving the vast paddy land beyond the fencing.

MR. CHAIRMAN: Please put the question. Otherwise you would not get the reply.

SHRI MATILAL SARKAR: Sir, the people are facing added troubles. The second part of my question is this. About 120 km. of the border area remains to be fenced. Fencing work has not been done there. It is due to be done. that is why an area is left for the terrorists to come inside and go outside. When will the remaining part of border fencing be completed?

SHRI SHIVRAJ V. PATIL: Sir, we are in the process of completing it and we would like to complete it as soon as possible. ...*(Interruptions)*... I agree that it has to be completed soon. ...*(Interruptions)*...

MR. CHAIRMAN: Question No. 582.

---

*Not recorded.